GLOBALLY
IMPACT FACTO
SJIF 2016
6.177

SRJIS

Online ISSN -2278-8808
Printed ISSN- 2319-4766

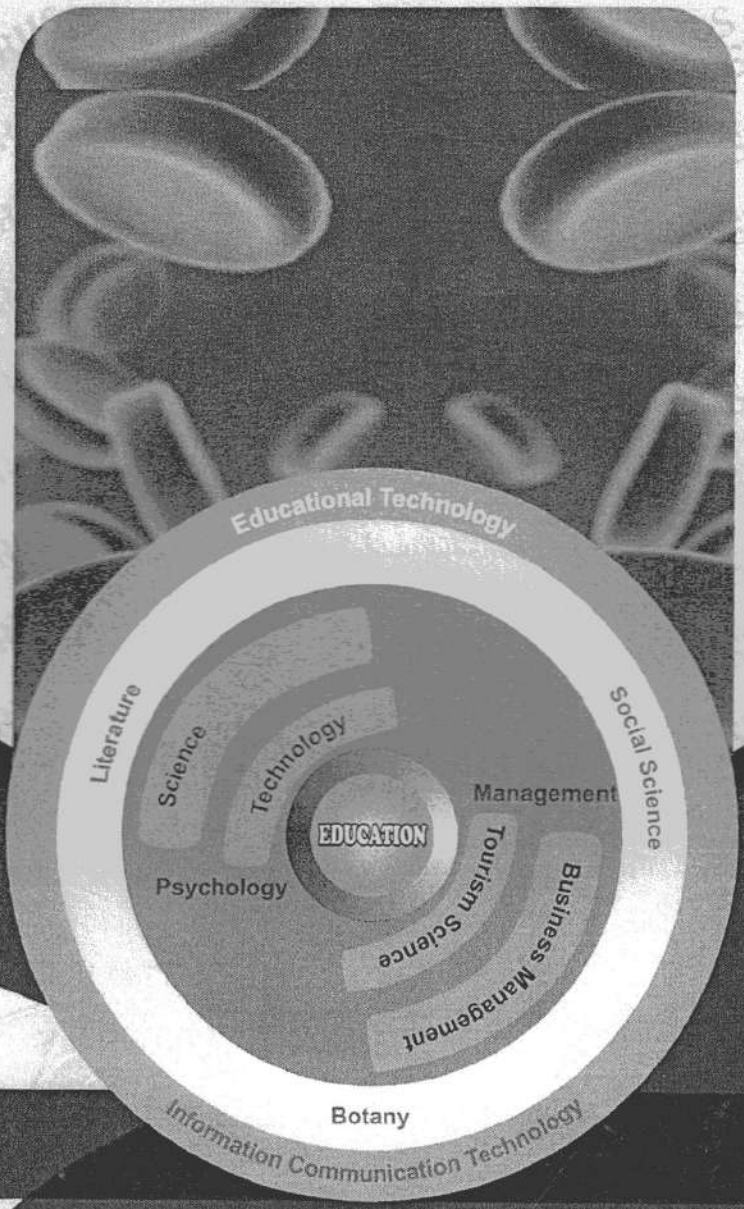

An International Peer Reviewed

Referred Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

SPECIAL ISSUE APRIL-JUNE, 2017. VOL. 6, ISSUE -30

EDITOR IN CHIEF : YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph.D.

8	कृष्णा सोबती के साहित्य में ग्राम–विमर्श *डॉ. लियाकत शेख*	45-49
9	आधुनिक रचनाकारों में महानगर और ग्राम विमश्ज्ञ *डॉ. सैय्यद मंजूर, कल्पना शर्मा*	50-53
10	कथाकार जगदीशचंद्र के उपन्यासों में अभिव्यक्त ग्रामीण जीवन *प्रा. आमलपुरे सुर्यकांत विश्वनाथराव*	54-56
11	'ग्राम्य जीवन' स्वरूप और विषेशता *डॉ. मंजूर सैय्यद, लिना भवसार*	57-59
12	समकालीन हिंदी एकांकी, नाटक साहित्य में महानगर चित्रण (साठोत्तरी नाटककार डॉ. शंकर शेष के नाटकों के संदर्भ में) *डॉ. अशोक धुलधुले, श्रीमती योगिता पाटील*	60-66
13	समकालीन हिंदी महानगरीय कथा साहित्य में नारी के विविध रूप *प्रा. पवार सीताबाई नामदेव*	67-72
14	उषा यादव के स्वॉग उपन्यास में आधुनिकता बोध *डॉ. मंजूर सैय्यद, शितल भावसार*	73-75
15	सुधा अरोड़ा के साहित्य के महानगर बोध *डॉ. मंजूर सैय्यद, प्रा.खालकर देविदास जगन्नाथ*	76-78
16	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन *डॉ. मिर्झा अनिसबेग रज्जाकबेग*	79-82
17	समकालीन हिंदी कहानी में महानगर–विमर्श *कु. राणी फासगे*	83-88
18	मनिषा कुलश्रेष्ठ के कहानियोंमें ग्राम:–विमर्श *डॉ. मंजूर सैय्यद ,श्रीमती जयश्री पवार*	89-91
19	महीप सिंह के उपन्यासों में महानगरीय – बोध *डॉ. मंजूर सैय्यद, संगीता गव्हाने*	92-95
20	महाश्वेतादेवी के दुष्कर उपन्यास में सामाजिक बोध *डॉ. मंजूर सैय्यद , कल्पना माळी*	96-99
21	रामदरश मिश्र के उपन्यासों मे ग्रामीण विमश्ज्ञ *श्रीमंडळे वैशाली शिवाजीराव*	100-103

मनिषा कुलश्रेष्ठ के कहानियोंमें ग्राम:–विमर्श

डॉ. मंजूर सैय्यद[१] , श्रीमती जयश्री पवार[२]

आधुनिक युवा पीढी की बहुप्रशांसित कथाकार मनिषा कुलश्रेष्ठ है । उनकी कहानियॉ अनूठी दुनिया के पात्रों और स्थितियों से मुलाकात करते है । ये रचनाएं हिन्दी की कहानियों से भिन्न हैं, उनके पात्र बंधी–बंधाई लीक पर चलने के आदी नहीं है । वे देशभक्ति के साक्षिदार है । वे इसी देश के बडे तबके के प्रतिनिधि है ।

ग्राम : जाति समुह, बस्ती, गॉव, टिह, दिहात, देहात, मौजे ऐसा है । अनेकानेक पर्याय है तो विमर्श से अभिप्राय है– किसी महत्वपूर्ण विषय पर विस्तार से चर्चा या विवेचन करना, उस विषय के प्रति चेतना निर्माण करना आदि ।

भारत कृषिप्रधान देश है । यहॉ दो–तिहाई से अधिक जनता गॉवो में रहती है । यह सच है की भारत की आत्मा गॉवो में बसती है । कठोर परिश्रम सरल स्वभाव और हृदय यह ग्रामीण जीवन की विशेषताएँ है । ग्रामों में जमींदार, सेठ साहुकार पूँजीपति, मांत्रिक–तांत्रिक आदि से शोषण और उनके अत्याचार सदियों से चलते आ रहे हैं । ग्राम समाज को आजीविका के साधन जुटाना आज भी मुश्किल है । परिणामत: ग्राम जीवन गरीबी, भूखमरी ऋण के बोज से किसान, मजदूर दब चूका है । उनका जीवन दु:खदायी है ।

आज की भ्रष्टाचारी, राजनीति, नेताओं का स्वार्थ सरकारी अधिकारियों की निष्क्रीयता आदि कारणों से ग्रामों के विकास में बाधा आई है । ग्रामों में गरिबी, बेराजगारी, शोषण बढ रहा है । इसलिए ग्रामीण लोग रोजी रोटी के तलाश में नगरों की ओर आकर्षित हो रहे है । इसका असर ग्रामों पर पड रहा है, आज ग्राम उजडने लगे है ।

'स्वांग' कहानी का गफूरिया ऐसा पात्र है, जिसने लोककला के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार पाया था । बहुरूपिया यह कला परंपरागत है । ग्राम भाग में प्रसारित होती है । कलाकार का जीवन निश्चल जल के समान होता है जो अनेक बाधाओं को सहते पार करते हुए प्रवाहित होता है जो ग्राम समाज को आनंद देता है । परंतु कलाकार का जीवन केवल आनंद एवं मनोरंजन पर ही अवलम्बित नहीं होता तो 'अर्थ पुरस्कार की चाहत उसकी कला को प्रकाश देती है । इसलिए वह उस आर्थिक लाभ की उम्मीद करता है जो कलाकारों को इलाज के लिए सरकार द्वारा दिया जाता है । वो राज्य सरकार जिसमें गफूरिया जैसे तीन हजार कलाकार है । जिनका खर्च उठाने के लिए सरकार असमर्थ है । वही सरकार मंत्री और कलेक्टर इनका खर्च आराम से उठाते है ।

और गफूरिया की बीवी जिंदगी भर की कमाई पूरे चौदह सौ छप्पन रूपये दे देती है उसके इलाज के लिए ।

'कालिंदी' आधुनिक स्त्री–विमर्श की कथा है । जिसमें समाज के बाधित व्यवसाय या कर्म की प्रस्तुति है । पेट की आग या भूख इन्सान को मजबूर कर देती है तो दुसरी और सामाजिक रीति–रीवाज परम्परा स्त्री कोचार दिवारों से बाहर नहीं आने देती । किन्तु मजबुरी एवं लाचारी में स्त्री को जो काम समाज में मान्य नहीं है वो करने पडते है । इस कहानी की स्त्री न्युड मॉडल है खुद की संतान को चाहत होती है कि अपनी माता क्या करती है इसके प्रती जिज्ञासा होती है ।

'मेरा ईश्वर यानी'आधुनिकता कहानी युवती की पहचान एवं अंतर्दवंदव की कहानी है । सफल जीवन का आधार प्रेम है । किन्तु उसे पाने या देने के साधन व्यक्ति परत्वे भिन्न होते है । प्रस्तूत कहानी की युवती अपने जीवन को प्रवाहित निश्चल पानी की धारा के समान बन्धनहिन जीना चाहती है । और जीवन का आनंद लेना चाहती है । उसे समाज परिवार की परवाह नहीं है ।

'एडोनिस का रक्त और लिली के फूल' कहानी की पृष्ठभूमि युध्द भूमि की है । इस कहानी में लेफ्टिनेंट की मुलाकात फौज की डॉक्टर अंबिका से युध्द में घायल स्थिति में होती है । जो लेफ्टिनेंट है वह अपनी बीमारी के हालत में किसी भी तरह युध्द भूमि जाना चाहता है और युध्द में सहभागी होना चाहता है ।

'परजीवी' का नायक शक, संदेह अविश्वासों में जिनेवाला है । उसे समझना बडा ही मुश्किल है । वह एक लडकी के लिए प्रयोग करता है जो उसकी निगाह में ना तो खुबसुरत है । नारी मन के पर्त खोलती यह कहानी पुरूषी वर्चस्व को प्रस्तुत करती है ।

'खरपतवार' कहानी का नायक मि. डैनियल है जो भागदौड भरी जिंदगी और जीवन के सुख दु:ख की है जिसमें नायक का पारिवारीक जीवन ऐसे स्त्री के संपर्क में आता है जिसका दुनिया में कोई नहीं । मनुष्य के बिच नैसर्गिक भावनाएँ होती है, चाहे पुरूष हो या स्त्री लेकिन उन भावनाओं की परिपूर्णता के स्त्रोत परम्परा से समाजमान्य स्वीकृत है । उन्हीं के आधार पर भारतीय समाज संस्कृति स्थित है । इन नियमों का पालन करना व्यक्ति एवं समाज की दृष्टिसे इन्सान का परम कर्तव्य है, डैनियल जो है वो उस लडकी से प्यार करने लगता है, लेकिन समाज की मान्यताओं के कारण वह उसे अपना नहीं सका ।

'बिगडैल बच्चे' यूवाओं के आधुनिक वर्तन की कहानी है । भरतीय बुध्दीवादी उच्च मध्यवर्गक की खासियत है कि, 'दिखावा करना या जो वह नहीं है वह दिखाना । इसी वर्ग की युवा पीढी पाश्चात्य जीवन शैली की और जबरदस्त आकर्षित है । वह भारतीय मूल्यों को पैरोतले रौंद रही है । उनके लिए बुजुर्ग–या वृध्द मनोरंजन का विषय है । यह पीढी अपने आप

संवेदनहीन बनती जा रही है । यह कहानी आधुनिक विचारोंकी और नई कहानी की प्रवृत्तियों को है ।

'कुरजां' भारतीय ग्राम की अन्धश्रध्द एवं परम्परा को व्यक्त करती है । आजाद भारत में अब भी अन्ध विचार और रितीरीवाज का बोलबाला है । कभी–कभार बुध्दीवादी भी इन अन्ध परम्पराओं का शिकार होता हुआ ज्ञान से अन्धा होता दृष्टी गोचर है । इन्हीं पर कुरीति एवं विचारों में से ग्राम एवं पहाडी, मरूस्थलिय प्रदेष की डायन प्रथा है जो स्त्री से सलग्न है ।

'फॉस' कहानी स्त्री विमर्श के महत्तम आयाम भ्रूण–हत्या को प्रकाश देती है । पुरूष अहंकार के कारण स्त्रीयों की दुर्गति भी व्यक्त है । भारतीय समाज व्यवस्था ऐसी है की, पितृसत्ताक पध्दति परम्परा से अनेक पिढियों से यहॉ निवास करती है, वहां स्त्रीयों को पुरूषों की तुलना में महत्व नहीं है । अत: एक पिता चार लडकियों के जन्म के बाद भी पुत्र की चाहत रखता है । किन्तु पुत्री होने से नैराश्य ही उसे सताता है । यही पिता संस्कारहिन निम्नवर्ग का सदस्य है ।

निष्कर्ष रूपमें विवेचित होता है, कि लेखिका के अन्य साहित्य की संवेदना एवं भावभूमि भलेही महानगरीय जीवन से संलग्न है किन्तू उनका ग्राम जीवन का चिंतन आज के ग्राम के वास्तव, यथार्थ को बडी सूक्ष्मता से प्रस्तुत करने में सफल हुआ है । घूमंन्तू प्रवृत्ति के कारण लेखिका ग्राम–जीवन की सूक्ष्म गहराई तक पहुँची है, की ग्राम समाज के पात्र अनेकानेक कारणों से अपना जीवन दु:ख समस्याओं में व्यतित कर रहे है, यही मनिषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों के ग्राम विमर्श की विशेष विशेषता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

मनिषा कुलश्रेष्ठ का कहानी संग्रह
गंधर्व गाथा, पृष्ठ संख्या –११,२९,४५,५६,७४,७९,१०१,११५,१३७
दुसरा संस्करण, २०१३
प्रकाशक, सामायिक प्रकाशन
३३२०–२१, जटवाडा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–११० ००२.

An International Peer reviewed

Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies (SRJIS) is provides the unique platform established by well-known academicians, research based community to create awareness among the youngsters, readers and contributors. SRJIS motivate to exchange innovations and ideas and Educational Practices Globally.

SRJIS Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies is an International Peer Reviewed Journal published online Bimonthly as well as printed Quarterly with an aim to provide a platform for researchers, practitioners, academicians and professional from diverse areas of all disciplines to bring out innovative research ideas & practices. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies is dedicated to publish high quality research articles on all aspects of education related to, Arts, Commerce, Science, Educational Technology, Information Communication and Technology, Education, Physical Education, Educational Psychology, English, Linguistics, Engineering, Management, Economics, Dramatics, Business Marketing, Archaeology, Public Administration, Political Science, Social Science, and related all disciplines. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies invites high quality research papers from all parts of the globe providing meaningful insights to research scholars.

Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies (SRJIS) is a Peer Reviewed, & Refereed International Journal published Quarterly a year.

The Journal welcomes the submission of research papers, conceptual articles, manuscripts, project reports; meet the general criteria of significance and academic excellence.

Printed ISSN 2319-4766

Online ISSN 2278-8808

S. No. 5+4/5+4,TCG's, SAI DATTA NIWAS, D-WING, F. NO-104,Dattanagar, Near Telco Colony, Ambegaon (BK), Pune.
Maharashtra. 411046. India. Website: www.srjis.com, Email : editor@srjis.com

₹ 750/-